फैलती लपट
(8:1-40)

प्रेरितों के काम का अध्याय 7 स्तिफनुस पर पथराव के साथ समाप्त होता है। स्तिफनुस के लिए, उसकी मृत्यु यश का अभिषेक बन गई और यहूदी सभा के लिए, निन्दा का कारण।[1] शाऊल के लिए, उसके विवेक को छेदने का कारण बनी। अन्त में कलीसिया के लिए, यह प्रभु की आज्ञा को पूरा करने का कारण बनी।

यीशु ने प्रेरितों को ''*सारे* जगत में जाकर'' और ''*सब* जातियों के लोगों को चेला बनाने'' की चुनौती दी (मरकुस 16:15; मत्ती 28:19)। उसने कहा, ''तुम ... यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे'' (1:8)। यीशु कलीसिया को एक नगर की धार्मिक सोसायटी *नहीं* बनाना चाहता था। परन्तु, अध्याय 7 के लिखे जाने तक कई वर्ष बीत चुके थे,[2] और कलीसिया अभी भी मुख्यत: यरूशलेम तक ही सीमित थी।[3]

प्रेरित यीशु के कार्यक्रम के दूसरे चरण के लिए आगे क्यों नहीं बढ़े थे? क्या वे उसके निर्देशों को नहीं समझ पाए? क्या वे अन्य क्षेत्रों में फैलने से पहले यरूशलेम में बहुत कुछ करने की सोचते थे? (मैं पतरस को एक आह भरकर तकिये पर सिर रखे श्रीमती पतरस से यह कहते हुए कल्पना कर सकता हूं: ''यहां यरूशलेम में ही कलीसिया को सम्भालना कितना कठिन हो रहा है! तुम कल्पना कर सकती हो कि जब कलीसिया पूरे संसार में फैल जाएगी तब कैसा होगा?'') कारण कुछ भी हो, सारे जगत में यीशु के सुसमाचार को ले जाने की योजना दलदल में फंस चुकी थी।

यहां पर परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया और कहा, ''सुसमाचार को यरूशलेम से बाहर निकालने का *यही समय है*।'' ''उसी दिन यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव होने लगा और प्रेरितों को छोड़ सब के सब यहूदिया और सामरिया देशों में तितर-बितर हो गए'' (8:1)। यहां हमें एक बात पर ध्यान देना होगा कि सताव परमेश्वर ने *उत्पन्न* नहीं किया; इसके पीछे शैतान का हाथ था, वह कट्टर शाऊल को अपने हथियार के रूप में इस्तेमाल कर रहा था परन्तु बाद में परमेश्वर ने इसे *इस्तेमाल किया*। जब मैं एक छोटा लड़का था, उन दिनों अमेरिका उस अन्तरराष्ट्रीय संघर्ष का भाग था जिसे द्वितीय विश्व युद्ध के नाम से जाना जाता है। कोई नहीं कहेगा कि इस भयंकर संघर्ष का, जिसने हज़ारों लोगों की जान ली, ज़िम्मेदार परमेश्वर होगा, परन्तु परमेश्वर ने इस युद्ध को अमेरिका में प्रभु की कलीसिया में मिशनरी आत्मा को जगाने के लिए *इस्तेमाल किया*। मसीही कर्मी घर लौटकर बताते थे कि सुदूर स्थानों तक सुसमाचार सुनाने की आवश्यकता है। बहुत से लोगों ने अपने आप को तैयार

किया और मसीह का चंगाई का सुसमाचार लेकर उन स्थानों की ओर चल पड़े जहां उन्होंने युद्ध किया था। बिल्कुल इसी तरह परमेश्वर ने उस सताव को, जो स्तिफनुस की मृत्यु से उठा था, प्रयोग किया। शैतान कलीसिया के विनाश के लिए उपद्रव करने लगा था; परमेश्वर ने कलीसिया को फैलाने के लिए इसका प्रयोग किया।

प्रेरितों 8 अध्याय के पहले भाग में जो कुछ हुआ, उसके लिए बहुत सी समानताएं सुझाई गई हैं। एक, कलीसिया को यरूशलेम में घिरी हुई बताती है। कलीसिया का विनाश करने के लिए शाऊल के प्रयासों से घड़ा टूट गया, और कलीसिया चारों दिशाओं की ओर बह गई। दूसरे का सुझाव है कि शाऊल ने जिस प्रकार कलीसिया को सताया वह वैसा ही था जैसे हवा बीज के साथ करती है अर्थात इसने इसे बिखरा दिया[4] और अच्छी उपज हुई। शायद सबसे अच्छी समानता है ग्रीस या तेल से लगी आग को बुझाने की कोशिश करना। ऐसी आग पानी की धार से नहीं बुझती; उल्टे यह *फैलती* है। अध्याय 8 में, जब शाऊल ने कलीसिया को सताया तो मसीहियत की आग फैलने लगी।

लपट फैलती है (8:1-4)

हिन्दी की बाइबल में सातवें अध्याय के अन्त में ये शब्द हैं: ''और शाऊल उसके [स्तिफनुस के] बध में सहमत था'' (7:60 ख)। और एक जगह लिखा है कि शाऊल को उसके काम के लिए सभा का समर्थन प्राप्त था (9:1, 2; 22:4, 5; 26:10); वह महासभा का भाड़े का हत्यारा था।[5] यकीनन ही उसके बहुत से सहायक थे (शायद भाड़े के गुण्डे);[6] इतना नुक्सान वह अकेला नहीं कर सकता था। परन्तु उस सताव के पीछे प्रेरक वह ''जवान'' शाऊल ही था, जिसके पांवों के पास स्तिफनुस पर पथराव के समय गवाहों ने अपने कपड़े रखे थे (7:58)।

आयत 1 कहती है: ''उसी दिन (जिस दिन स्तिफनुस मरा) यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव होने लगा'' (8:1 क)। क्योंकि स्तिफनुस की हत्या सभा की इच्छा से हुई थी, इसलिए मैं मान लेता हूं कि यह उपद्रव धनवानों और शक्तिशाली लोगों के गुप्त कक्षों में कुटिल षड्यन्त्र नहीं था, बल्कि स्तिफनुस की हत्या की तरह स्वेच्छानुसार था।

वाक्यांश ''उसी दिन ... बड़ा उपद्रव होने लगा'' का भाव यह नहीं कि अध्याय 8 की पहली चार आयतों की सारी घटनाएं उसी दिन घटीं जिस दिन स्तिफनुस मरा। बल्कि, यह कि उस दिन *आर भ हुआ* उपद्रव कई दिनों तक चलता रहा।

उपद्रव होने पर ''सब के सब *यहूदिया और सामरिया देशों में* तितर-बितर हो गए'' (8:1ख)।[7] यह आयत 1:8 में यीशु के कथन की ओर संकेत करती है कि ''तुम ... यरूशलेम *और सारे यहूदिया और सामरिया में,* और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे।'' हम यीशु की योजना के दूसरे चरण में पहुंच चुके हैं।

ध्यान दें कि '' *प्रेरितों को छोड़* सब के सब *यहूदिया और सामरिया देशों में* तितर-बितर हो गए ...'' थे (8:1ख)। हमें यह पता नहीं कि अन्य मसीहियों की तरह प्रेरित क्यों तितर-बितर नहीं हुए। शायद, उनकी शक्ति से डरकर और यह मानकर कि यदि उनके अनुयायी

नहीं होंगे तो उनसे किसी प्रकार का ख़तरा नहीं होगा, शाऊल और उसके सहायकों ने उन्हें अकेले छोड़ दिया। शायद जोखिम की परवाह किए बिना प्रेरितों ने रहने के लिए यरूशलेम को *चुना* ताकि जिन मसीहियों की ओर शाऊल का ध्यान नहीं गया था,[8] वे उनकी और गिरज़्तार हुए लोगों की सेवा कर सकें। कोई अन्य कारण भी हो सकता है।[9] लूका का उद्देश्य यह बताना नहीं था कि उपद्रव ने प्रेरितों को कैसे प्रभावित किया, बल्कि, यह था कि उपद्रव ने कलीसिया के साधारण सदस्यों को प्रभावित किया। यह पहली बार था कि उत्पीड़न के लिए सज़्पूर्ण कलीसिया को निशाना बनाया गया। प्रेरित दबाव में स्थिर रह सकते थे (अध्याय 4 और 5)। कलीसिया के अन्य सदस्यों का क्या हुआ? उनकी दशा क्या होगी?

हमें अधिक देर तक आश्चर्य नहीं होता, क्योंकि पद 2 कहता है, ''और भक्तों ने स्तिफनुस को कब्र में रखा, और उसके लिए बड़ा विलाप किया'' (आयत 2)। स्तिफनुस के खून से लथपथ शव को धरती पर पड़ा देखकर क्रुद्ध भीड़ चली गई थी, खून की उनकी प्यास थोड़ी देर के लिए बुझ गई थी। मसीही,[10] जो जानते थे कि वे क्या जोखिम उठा रहे थे, उस स्थान पर आए और क्षत-विक्षत शव को बड़े प्यार से उठाकर, उसे दफ़नाने की तैयारी करने के लिए घर ले गए। यहूदी कानून मृत्यु दण्ड प्राप्त अपराधियों को दफ़नाने की अनुमति देता था परन्तु उनके लिए शोक करने की मनाही करता था।[11] ख़तरे के बावजूद, इन बहादुर लोगों ने अपने दुख को छिपाने का कोई प्रयास नहीं किया; वे ज़ोर-ज़ोर से रोए!

जिस समय ये लोग उदासी में डूबे हुए थे, शाऊल पागलपन में डूबा हुआ था: ''शाऊल कलीसिया को उजाड़ रहा था; और घर-घर घुसकर पुरुषों और स्त्रियों[12] को घसीट घसीटकर बन्दीगृह में डालता था'' (आयत 3)। यूनानी भाषा के अनुवादित शब्द ''उजाड़ रहा'' का इस्तेमाल मार्ग में चौपाये पशुओं द्वारा अपने शिकार को मारने और फाड़ने के लिए होता था। शाऊल एक जंगली जानवर बन चुका था जिसका एकमात्र उद्देश्य था, कलीसिया का विनाश। पुरुष हो या स्त्री वह किसी को नहीं छोड़ता था। शाऊल और उसके साथी मसीहियों के घरों में घुसते होंगे, माता-पिता के हाथ पीछे से बांध देते होंगे, और बच्चों को बिलखते छोड़कर उन्हें घसीटते हुए बन्दीगृह तक लाते होंगे। बन्दीगृह में, इस उद्देश्य से कि किसी प्रकार वे अपने विश्वास का इन्कार कर दें, वह उन्हें पीटता और यातना देता होगा। कइयों को मौत के घाट उतार दिया गया था। बाद में उसने अपनी धर्मांधता के बारे में बताया:

> और मैंने पुरुष और स्त्री दोनों को बान्ध बान्धकर, और बन्दीगृह में डाल डालकर, इस पंथ को यहां तक सताया कि उन्हें मरवा भी डाला ... कि मैं ... (यीशु) पर विश्वास करने वालों को बन्दीगृह में डालता और जगह-जगह आराधनालय में पिटवाता था।... और मैंने ... पवित्र लोगों को बन्दीगृह में डाला, और जब वे मार डाले जाते थे, तो मैं भी उन के विरोध में अपनी सज़्मति देता था। और हर आराधनालय में मैं उन्हें ताड़ना दिला दिलाकर यीशु की निन्दा करवाता था, यहां तक कि क्रोध के मारे ऐसा पागल हो गया, कि बाहर के नगरों में भी जाकर उन्हें सताता था[13] (22:4, 19; 26:10, 11)।

अध्याय 8 का पद 4 हमें उनकी ओर वापस ले आता है जो तितर-बितर हो गए थे। अपने मन में उनका चित्र बनाएं। उनके पास जो कुछ भी था अर्थात घर, भेड़ों के झुण्ड और गल्ले, सज़त्तियां, जो वे अपनी पीठ पर उठा सकते थे, को छोड़ उनका सब कुछ छिन गया था। उन्हें फलस्तीन के धूल भरे मार्गों में घिसटते हुए चलते देखें। सड़क पर लोगों के सामने से गुज़रते हुए वे आकर्षण का केन्द्र बने होंगे। लोग कहते होंगे, ''क्या हुआ?'' आपको क्या लगता है कि इन मसीहियों ने क्या उत्तर दिया होगा? ''हमारा सब कुछ छिन गया''? ''हमें पता चल गया है कि यीशु के पीछे चलना कितना कठिन है''? ''पता नहीं मैं आगे और चल पाऊंगा या नहीं''? आयत 4 पर ध्यान दें: ''जो तितर-बितर हुए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे''! अनुवादित यूनानी शब्द ''सुसमाचार सुनाते'' ''प्रचार'' का कोई सामान्य शब्द नहीं बल्कि सुसमाचार अर्थात शुभ समाचार का प्रचार करना है! सताए हुए ये मसीही यह कहते नहीं घूम रहे थे कि ''देखो संसार किधर आ रहा है!'' बल्कि वे यह कह रहे थे, ''देखो संसार के पास कौन आया है!''

इन मसीहियों ने स्तिफनुस के उदाहरण से सीख लिया था कि उनके शत्रु उनके मांस को पीस सकते थे परन्तु उनकी आत्माओं को नहीं; वे उनके प्राणों को मिटा सकते थे परन्तु उनके प्रभाव को नहीं; वे उनके मकानों पर कब्ज़ा कर सकते थे परन्तु उनके घरों पर नहीं (यूहन्ना 14:1-3); वे उनकी सज़त्तियों को चुरा सकते थे परन्तु उनके खज़ाने को नहीं (मत्ती 6:20)।[14]

लपटें उत्तर की ओर फैलती हैं (8:5-25)

1 और 4 आयतों का विषय अध्याय 11 में विस्तार पाता है: ''सो जो लोग उस क्लेश के मारे जो स्तिफनुस के कारण पड़ा था, तितर-बितर हो गए थे, वे फिरते-फिरते फीनीके और कुप्रुस और अन्ताकिया में पहुंचे; परन्तु यहूदियों को छोड़ किसी और को वचन न सुनाते थे'' (11:19)। परन्तु, थोड़ी देर के लिए, लूका ने एक विशेष मसीही पर ध्यान केन्द्रित रखा जिसने यरूशलेम से थोड़ी दूरी पर सुसमाचार का प्रचार किया था: ''और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा'' (8:5)।

5 से 25 तक के पद सामरियों के मनपरिर्वतन के बारे में बताते हैं। प्रेरितों के काम की पुस्तक में मनपरिवर्तन का यह *दूसरा* विस्तृत वृत्तांत है। अध्याय 2 में, हमने पिन्तेकुस्त के दिन यहूदियों के मनपरिवर्तन का विस्तृत वृत्तांत देखा था। तब से लेकर, यहूदियों के अलावा और किसी का मनपरिवर्तन नहीं हुआ था, सो विस्तृत वृत्तांतों के बजाय, हमने संक्षिप्त कथन देखे थे:

> ... और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था (2:47)।
>
> और विश्वास करने वाले बहुतेरे पुरुष और स्त्रियां प्रभु की कलीसिया में और भी अधिक आकर मिलते रहे (5:14)।

... और यरूशलेम में चेलों की गिनती बहुत बढ़ती गई; और याजकों का एक बड़ा समाज इस मत के आधीन हो गया (6:7)।

परन्तु, अब हम, आंशिक-यहूदी, आंशिक-अन्यजाति, सामरियों में सुसमाचार के पहुंचने पर एक बहुत बड़ा कदम उठाते हैं। यहां हमें सामरियों के मनपरिवर्तन अर्थात यहूदियों और सामरियों को जोड़ने वाली कड़ी मिलती है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में हर बार हमारे पास मनपरिवर्तन का विस्तृत वृत्तांत होता है, यह एक ''ब्रिज'' कनवर्शन है अर्थात ऐसा मनपरिवर्तन जो सुसमाचार को फैलाने की नई सम्भावनाएं दिखाता है।

इस कदम के महत्व को जानने के लिए, हमें सामरियों और यहूदियों के बीच उनके सम्बन्ध के बारे में थोड़ी-बहुत समझ होनी आवश्यक है।[15] यीशु और प्रेरितों के समय में, सामरी लोग फलस्तीन के मुख्य भाग, सामरिया में रहते थे, जो गलील और यहूदिया के बीच स्थित था।[16] सामरी जाति यहूदियों की दासता का परिणाम थी। हज़ारों यहूदी दास बनाकर ले जाए गए, परन्तु कुछ फलस्तीन में ही रहे। अन्य देशों के उपनिवेशक फलस्तीन में भेजे गए थे। इन अन्यजातियों ने यहूदियों के साथ विवाह कर लिए थे। उनमें से जो जाति निकली वे सामरी कहलाए। वे लोग कुछ यहूदी, कुछ अन्यजाति, कुछ परमेश्वर की आराधना करने वाले और कुछ मूर्तियों की उपासना करने वाले थे।[17] दासत्व में जाने वाले यहूदी जब फलस्तीन लौटे, तो वे इस बात पर गर्व करते थे कि उन्होंने अपनी जातीय और धार्मिक शुद्धता को बरकरार रखा था और वे सामरियों को तिरस्कारपूर्ण दृष्टि से देखते थे। उन्होंने पुनर्निर्माण के लिए सामरियों की सहायता लेने से इन्कार कर दिया, जिससे मतभेद और गहरे हो गए जो कि यीशु और प्रेरितों के समय में भी थे। यहूदी और सामरी एक दूसरे से *घृणा करते* थे। यीशु और सामरी औरत की कहानी में, यह टिप्पणी की गई है कि ''यहूदी सामरियों के साथ किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखते'' थे (यूहन्ना 4:9) और सामरी भी नहीं। *मु य* मानसिक और भावनात्मक रुकावटों पर नियंत्रण सामरियों के साथ सुसमाचार को बांट कर ही किया जाना था।

जिस आदमी को परमेश्वर ने सामरियों में सुसमाचार प्रचार के लिए इस्तेमाल किया, वह फिलिप्पुस था। यह फिलिप्पुस प्रेरित नहीं था (1:13), बल्कि यह वह फिलिप्पुस है जिसके बारे में हमने अध्याय 6 में पढ़ा था। यह उन सात में से एक था जिनको खिलाने-पिलाने की सेवा के लिए चुना गया था। क्योंकि उसमें प्रेरितों द्वारा ठहराई गई योग्यताएं थीं, इसलिए हमें ज्ञात है कि वह ''सुनाम'' और ''पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण''[18] था (6:3)। वह यूनानी भाषा बोलने वाला यहूदी भी था, जो फलस्तीन के बाहर पैदा हुआ, पला-बढ़ा और इस कारण उसकी पूर्वधारणाएं एक फलस्तीनी यहूदी की तरह सामरियों के विरुद्ध नहीं थीं।

''फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर[19] लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा'' (8:5)। हम यह नहीं जानते कि फिलिप्पुस किस नगर में गया। बहुत से विद्वानों का मानना है कि ''सामरिया नगर'' का अर्थ या तो ''सामरिया नाम का कोई नगर'' है या ''सामरिया का

कोई प्रमुख नगर,'' जिसने इस प्राचीन राजधानी को जिसका पहला नाम सामरिया था, सिबस्ते[20] नगर बना दिया था। अन्य इसके समान ही यह मानते हैं कि फिलिप्पुस किसी अन्य नगर[21] शायद सूखार में गया, जहां यीशु कुएं पर सामरी औरत से मिला था (यूहन्ना 4:4)। सूखार में यीशु के स्वागत से वह यह कहने के लिए प्रेरित हुआ कि सामरी एक ऐसा खेत था जिसकी फसल कटनी के लिए तैयार हो चुकी थी (यूहन्ना 4:35)। परमेश्वर के पूर्व प्रबन्ध के अनुसार, फिलिप्पुस उसी फसल को काटने के लिए आया होगा।

प्रेरितों ने स्तिफनुस की तरह, फिलिप्पुस पर हाथ रखे थे,[22] इसलिए वह आश्चर्यकर्म करने के योग्य था (6:8)। इन आश्चर्यकर्मों से उसे तैयार श्रोता मिल गए और उसे मान्यता भी मिली।[23] हम पढ़ते हैं:

> और जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर और जो चिह्न वह दिखाता था उन्हें देख देखकर, एक चित्त होकर मन लगाया। क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माएं बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गईं,[24] और बहुत से झोले के मारे हुए और लंगड़े भी अच्छे किए गए।[25] और उस नगर में बड़ा आनन्द हुआ (आयतें 6-8)।

परन्तु, नगर में हर कोई प्रसन्न नहीं था। फिलिप्पुस के आने से पहले वहां एक और व्यक्ति आकर्षण का केन्द्र था:

> इस से पहिले उस नगर में शमौन नाम का एक मनुष्य था, जो टोना करके[26] सामरिया के लोगों को चकित करता और अपने आप को कोई बड़ा पुरुष बनाता था; और सब छोटे से बड़े तक उसे मानकर कहते थे कि, ''यह मनुष्य परमेश्वर की वह शक्ति है जो महान कहलाती है।'' उसने बहुत दिनों से उन्हें अपने टोने के कामों से चकित कर रखा था, इसीलिए वे उसको बहुत मानते थे (आयत 9-11)।

जब हम शमौन के बारे में पढ़ते हैं कि किसी न किसी तरह वह सामरियों को धोखा दे रहा था, तो हमें आश्चर्य होता है कि यह कैसे हो सकता है। सामरी उसी परमेश्वर की आराधना करते थे जिसकी यहूदी करते थे। सामरियों की बाइबल पुराने नियम की पहली पांच किताबें थीं और वे किताबें दृढ़तापूर्वक जादूगरी के विरुद्ध बोलती थीं (देखिए निर्गमन 22:18; व्यवस्थाविवरण 18:10-12)। हमें आश्चर्य होता है कि सामरिया के लोग शमौन पर विश्वास के साथ-साथ यहोवा पर विश्वास कैसे कर सकते थे। फिर हम अपने चारों ओर के संसार की ओर नज़र उठाकर देखते हैं, तो इसे समझना कठिन नहीं लगता। अमेरिका में, 90 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या परमेश्वर में विश्वास करने का दावा करती है परन्तु, अन्धविश्वासों की भी भरमार है। लगभग हर एक समाचार पत्र और पत्रिका में ज्योतिष का कॉलम होता है। ''आध्यात्मिक'' सलाहकार हर साल अरबों डॉलर कमा रहे हैं। देश में ''नये युग'' का प्रचार फैल रहा है। पी. टी. बर्नम[27] ने एक बार कहा, ''प्रत्येक मिनट में एक दूध पीने वाला जन्म लेता है!'' संसार में शमौन तो हमेशा रहेंगे और उनमें विश्वास करने के

लिए तैयार भोले-भाले लोग भी हमेशा रहेंगे!

जब फिलिप्पुस *वास्तविक* आश्चर्यकर्म करते हुए आया, तो शमौन के झूठे आश्चर्यकर्म नगण्य लगने लगे।[28] ''परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस की प्रतीति की जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्या पुरुष, क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे'' (आयत 12)। यहूदियों की तरह ही (2:38), सामरियों के लिए भी विश्वास करके बपतिस्मा लेना आवश्यक था।

फिलिप्पुस के संदेश की सामर्थ शमौन पर पड़े इसके प्रभाव से स्पष्ट दिखाई देती है: ''तब शमौन ने आप भी प्रतीति की और बपतिस्मा लेकर फिलिप्पुस के साथ रहने लगा और चिह्न और बड़े-बड़े सामर्थ के काम होते देखकर चकित होता था'' (आयत 13)।[29] कुछ लोग यह आशंका प्रकट करते हुए कि उसका उद्धार पहले ही हो गया था, शमौन के मनपरिवर्तन को चुनौती देते हैं। तथापि, लूका कहता है कि शमौन ने एक ही उद्देश्य के लिए वही किया जो अन्य सामरियों ने किया।

उद्धार सामरियों के लिए आया था, जिनमें शमौन भी था! परन्तु, यह आवश्यक था कि यहूदी और सामरी समझ लें कि फिलिप्पुस के काम को परमेश्वर की स्वीकृति थी और यह कि सामरी मसीही यहूदी मसीहियों के बराबर थे। अत: हम पढ़ते हैं, ''जब प्रेरितों ने जो यरूशलेम में थे सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन मान लिया है तो पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा'' (आयत 14)। प्रेरित यरूशलेम में जीवन-मृत्यु से संघर्ष कर रहे थे, परन्तु उन्होंने उत्तर दिशा की ओर होने वाली बातों के महत्व को महसूस किया। इस कारण उन्होंने अपने में से दो चुनिंदा पुरुषों अर्थात पतरस और यूहन्ना को भेजा।[30]

प्रेरितों ने इन प्रतिनिधियों को ही क्यों भेजा? क्या उन्होंने यह सुनिश्चित करने के लिए उस काम का निरीक्षण करना था कि यह परमेश्वर की स्वीकृति से *था*? यदि ऐसा है, तो उन्हें इस काम को परमेश्वर की ''स्वीकृति की मुहर'' लगाने के लिए किसने प्रेरित किया:

> तो पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा। और उन्होंने जाकर उनके लिए प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएं। क्योंकि वह अब तक उन में से किसी पर न उतरा था, उन्होंने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था। तब उन्होंने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया (आयतें 14ख-17)।

पहले तो आयत 16 अजीब सी लगती है: ''क्योंकि वह (पवित्र आत्मा) अब तक उनमें से किसी पर न उतरा था, उन्होंने तो केवल प्रजु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था।'' ''परमेश्वर पक्षपात करने वाला नहीं,'' इसलिए जब सामरियों का यीशु के नाम में बपतिस्मा हुआ, तो यकीनन ही उन्होंने वही आशीष पाई जो यहूदियों ने पाई थी, जिसमें दान के रूप में पवित्र आत्मा का पाना भी शामिल था (2:38; 5:32)।[31] फिर, लूका ने क्यों कहा कि पवित्र आत्मा ''अब तक उन में से किसी पर न उतरा था''? आत्मा का कुछ निश्चित लोगों पर ''उतरने'' का शब्द चयन आत्मा के पाने (जब किसी को पवित्र शास्त्र के अनुसार बपतिस्मा दिया जाता है) से सम्बन्धित कोई साधारण इस्तेमाल नहीं है; दूसरी ओर, इन शब्दों का

प्रयोग बपतिस्मा लेने वालों पर आत्मा के आने और उन्हें आश्चर्यकर्म करने योग्य बनाने के लिए किया गया है (तु. 10:44; 11:15)। लूका कह रहा था कि जब तक पतरस और यूहन्ना नहीं आए, सामरियों में से किसी को भी आश्चर्यकर्म *करने* की योग्यता नहीं मिली थी। इस पर आयत 18 की भाषा में बल दिया गया है कि लूका ने आश्चर्यकर्म करने की योग्यताओं के दिए जाने की बात कही है ''जब शमौन ने *देखा* कि ... पवित्र आत्मा दिया जाता है ...।'' पवित्र आत्मा का दिया जाना देखे जा सकने वाले विशेष चिह्नों के साथ नहीं था; आश्चर्यकर्म करने की योग्यताओं के दिए जाने के साथ विशेष चिह्न देखे जा सकते थे।

इससे पहले प्रेरितों ने स्तिफनुस और फिलिप्पुस पर हाथ रख कर (6:6), उन्हें अद्‌भुत कार्य करने की योग्यताएं दी थीं (6:8; 8:6-8)। अब पतरस और यूहन्ना ने सामरियों पर हाथ रखे: ''पतरस और यूहन्ना ... ने जाकर उनके लिए प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएं ... तब उन्होंने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया'' (8:14, 15, 17)।

इसमें निहित अर्थ पर ध्यान दें कि फिलिप्पुस उन विशेष दानों को आगे नहीं दे सकता था जो उसे प्रेरितों के हाथ रखने से मिले थे।[32] क्योंकि लोगों पर हाथ रखने और उन्हें ये विशेष दान देने के लिए प्रेरितों को आना पड़ा था। आयत 18 ज़ोर देती है कि ''*प्रेरितों* के हाथ रखने से पवित्र आत्मा दिया जाता'' था। जब *प्रेरित* मर गए और वे भी मर गए जिन पर उन्होंने हाथ रखे थे तो आश्चर्यकर्म करने की योग्यता जाती रही।[33]

सम्भवत: पतरस और यूहन्ना के जाकर सामरियों को विशेष चमत्कारी दान देने के जाने के कम से कम दो उद्देश्य रहे होंगे। पहला,उनके कार्यों ने यह दिखा दिया कि परमेश्वर और प्रेरितों ने भी सचमुच सामरियों को कलीसिया के एक भाग के रूप में स्वीकार कर लिया है।[34] दूसरा, इन दानों के दिए जाने से सामरिया के मसीही पतरस, यूहन्ना और फिलिप्पुस के जाने के बाद अपने आप काम कर सकते थे। परमेश्वर की योजना के अनुसार फिलिप्पुस ने शीघ्र ही उन्हें छोड़कर चले जाना था (8:26)।

हम आयत 18 में शमौन की कहानी की ओर लौटते हैं। पतरस और यूहन्ना को चमत्कारी दान देते देखकर, लोगों में प्रसिद्धि पाने की उसकी इच्छा फिर से जाग उठी:

> जब शमौन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ[35] रखने से पवित्र आत्मा दिया जाता है, तो उनके पास रुपये लाकर[36] कहा कि, ''यह अधिकार मुझे भी दो, कि जिस किसी पर हाथ रखूं, वह पवित्र आत्मा पाए'' (आयतें 18, 19)।

शमौन यह योग्यता क्यों पाना चाहता था? हम निश्चित तौर पर इतना ही कह सकते हैं कि शमौन पतरस और यूहन्ना से ऐसी बिनती करके एक मामूली नहीं, बल्कि भयंकर भूल कर रहा था।

> पतरस ने उससे कहा, ''तेरे रुपये तेरे साथ नाश हों,[37] क्योंकि तू ने परमेश्वर का दान[38] रुपयों से मोल लेने का विचार किया! इस बात में न तेरा हिस्सा है न बांटा;[39] क्योंकि तेरा मन परमेश्वर के आगे सीधा नहीं।[40] इसलिए अपनी इस बुराई से मन फिराकर प्रभु से प्रार्थना कर, सम्भव है तेरे मन का विचार क्षमा किया जाए। क्योंकि मैं देखता

हूं, कि तू पित्त की सी कड़वाहट और अधर्म के बन्धन में पड़ा है'' (आयतें 20-23)।[41]

कुछ लेखक पतरस के कड़े शब्दों को देखकर कहते हैं, ''मैं कहता हूं कि शमौन वास्तव में परिवर्तित हुआ नहीं हुआ था!'' पतरस के शब्द यह प्रमाणित नहीं करते कि शमौन मसीही बना ही नहीं था। बल्कि वे इन तीन सच्चाइयों पर ज़ोर देते हैं जिनका हर एक नये परिवर्तित मसीही को अहसास होना चाहिए: (1) यद्यपि हम परमेश्वर की संतान हैं, फिर भी हम पाप में फिर से जा सकते हैं (याकूब 5:19, 20)।[42] (2) मसीही बनने के बाद, अभी भी हम में वही शारीरिक निर्बलताएं हैं। जितने संतों को मैं जानता हूं पौलुस, उन सब से अधिक ''सुपर संत'' होने के योग्य था, परन्तु वह अभी भी शरीर की अभिलाषाओं से संघर्ष कर रहा था (रोमियों 7) और उसे अपने शरीर को संयमित करने के लिए ''मारना कूटना''[43] पड़ता था (1 कुरिन्थियों 9:27)। परमेश्वर हमारी निर्बलताओं को मिटाता नहीं, बल्कि वह हमें इन्हें संयमित करने के लिए सामर्थ देता है। हे नये मसीही, ध्यान रखना कि तुझ्हारे अन्दर अभी भी निर्बलताएं हैं, और ऐसी परिस्थितियों से दूर रहना जिनमें तुम परीक्षा में पड़ सकते हो (1 कुरिन्थियों 10:12)! (3) मसीही होने के बाद घोर पाप करने पर भी, हम परमेश्वर की ओर लौट सकते हैं!

पतरस ने शमौन को बताया, ''इसलिए अपनी बुराई से मन फिराकर प्रभु से प्रार्थना कर, *स भव* है तेरे मन का विचार क्षमा किया जाए'' (आयत 22)। ''सज़्भव'' शब्द क्षमा करने की परमेश्वर की योग्यता के बारे में नहीं है, बल्कि शमौन की मन फिराने की योग्यता के लिए है। मेरा मानना है कि उन्होंने शमौन को निराश नहीं किया, बल्कि उसकी सहायता करनी चाही होगी (तु. योएल 2:12-14)। पतरस के कहने का भाव यह था, ''यदि तू मन फिरा सकता है तो एक कड़वा मन मीठा बन सकता है! यदि तू मन फिरा सकता है, तो पाप की हथकड़ियां फिर से टूट सकती हैं!''

पतरस के शब्दों ने शमौन को स्तब्ध कर दिया और उसने अनुभव किया कि वह कितनी भयंकर स्थिति में था। परन्तु ''शमौन ने उत्तर दिया कि तुम मेरे लिए प्रभु से प्रार्थना करो कि जो बातें तुम ने कहीं उन में से कोई मुझ पर न आ पड़े'' (आयत 24)। एक बार फिर, शमौन के आलोचक उसके कामों पर हर प्रकार के दोष लगाते हैं। ''स्वयं प्रार्थना करने के बजाय,'' वे निष्कर्ष निकालते हैं, कि ''शमौन ने पतरस और यूहन्ना को अपने लिए प्रार्थना करने के लिए कहा।'' लूका ने यह नहीं कहा कि शमौन मन फिराने और प्रार्थना करने में नाकाम रहा। बल्कि, उसने ज़ोर दिया कि शमौन की घबराहट इतनी थी कि उसने प्रेरितों के पास अपने लिए प्रार्थना करने की बिनती की, सज़्भवत: यह उसकी अपनी प्रार्थनाओं के अतिरिक्त था। साथी मसीहियों को अपने लिए प्रार्थना करने को कहना गलत नहीं है (याकूब 5:16)।[44] मुझे यह सोचना अच्छा लगता है कि शमौन की चिन्ता निष्कपट थी और आत्मिकता से प्रेरित थी और शमौन का बाद का दृष्टिकोण उस पूर्व जादूगर का पश्चात्ताप करके घुटनों पर आना है।[45]

पतरस और यूहन्ना ने नये मसीहियों के साथ कुछ और दिन बिताए, और फिर घर की

ओर चले गए: ''सो वे गवाही देकर[46] और प्रभु का वचन सुनाकर, यरूशलेम को लौट गए, और सामरियों के बहुत गांवों में सुसमाचार सुनाते गए'' (पद 25)।[47] यीशु ने कहा था कि प्रेरित यहूदिया और सामरिया में गवाह होंगे, और अन्त में, ये बातें सच ठहरीं। फिलिप्पुस द्वारा सामरिया के एक नगर में लगाई गई आग सारे इलाके में फैल गई।

लपटें दक्षिण की ओर फैलती हैं (8:26-40)

सुसमाचार की लपटें केवल यरूशलेम से उत्तर की ओर ही नहीं फैलीं; बल्कि दक्षिण की ओर भी फैल गईं। 26 से 40 आयतों में, हमें रानी के ख़ज़ांची के मनपरिवर्तन के बारे में पता चलता है, जो सुसमाचार को वापस इथियोपिया में ले गया। यह मनपरिवर्तन, जिसका हम अगले पाठ में विस्तार से अध्ययन करेंगे, एक और ''ब्रिज'' कनवर्शन है। खोजा सज़्भवत: गैर यहूदियों से यहूदी बन गया था; अन्य शब्दों में, वह एक यहूदी धर्मान्तरित था जिसने यहूदियों और अन्यजातियों के बीच प्रचार करने के लिए एक पुल का काम करना था।[48] और भी महत्वपूर्ण, मनपरिवर्तन के बाद, वह उद्धार की कहानी को साथ लेकर, अपने देश अफ्रीका चला गया।[49] यीशु का संदेश सभी दिशाओं में फैल रहा था!

सारांश

आज, कुछ मण्डलियां ''भाड़े की बन्दूकों'' की मानसिकता से पीड़ित हैं। प्राचीन पश्चिम में कई बार नगरों में लोग जब ''बुरे लोगों'' का सामना नहीं कर पाते तो वे बन्दूकधारी व्यक्तियों को भाड़े पर ले लेते थे ताकि वे नगर को पवित्र कर दें। इसी प्रकार, कुछ मण्डलियां कलीसिया के विकास के लिए भाड़े की ''बन्दूकों'' (अर्थात वैतनिक कर्मचारियों) को लेने वाली कलीसिया बनने की सोचती हैं। वे कहते हैं, ''यदि हम सही लोगों को भाड़े पर ले सकें तो इससे हमारी सारी समस्याओं का समाधान हो जाएगा।''[50] आरज़्भिक कलीसिया का व्यवहार ऐसा नहीं था। लूका ने इस बात को भी स्पष्ट किया कि ''फुल टाइम स्टाफ'' (अर्थात प्रेरित)[51] उनमें *नहीं* थे जो तितर-बितर हो गए, और ये असाधारण ''साधारण'' सदस्य ही थे जो ''सुसमाचार सुनाते हुए फिरे।''[52] लड़के-लड़कियां, पुरुष तथा स्त्रियां *सभी* जो मसीही थे सुसमाचार की बात दूसरों को बताते थे! आपको प्रेरितों के काम की पुस्तक में ''कलीसिया की वृद्धि के भेद'' पर कोई स्पष्ट वाक्य नहीं मिलेगा!

मैं उस दिन की प्रतीक्षा में हूं जिस दिन हर एक मसीही चाहे वह भारतवर्ष में हो या किसी अन्य देश में, प्रजु से इतना भर जाए कि वह अपने सब मिलने वालों के साथ सुसमाचार को बांट सके! एक बार फिर सुसमाचार की आग पृथ्वी के चारों ओर फैल जाएगी!

पाद टिप्पणियां

[1]अनेक लोगों का कहना है कि स्तिफनुस का प्रवचन ''यहूदियों के लिए अन्तिम अवसर'' था। यह एक अतियुक्ति है। पौलुस और अन्यों ने जहां कहीं भी वे गए यहूदियों तक पहुंचने की कोशिश जारी रखी (ध्यान दें कि 28:16-31 में प्रेरितों की पुस्तक का समापन कैसे होता है)। तथापि, सम्भवत:, *यरूशलेम* में पहुंचने का परमेश्वर का यह अन्तिम बड़ा प्रयास *था* (ध्यान दें मत्ती 23:37, 38)। तीस या चालीस वर्ष बाद, विस्पैनियन और तीतुस की सेनाओं ने यरूशलेम और मन्दिर को तहस-नहस कर दिया, जिसमें दस लाख से अधिक लोग मारे गए। [2]कालानुक्रमों में तीन या चार से लेकर सात या आठ वर्ष का अन्तर है। [3]यह अनुमान है कि पिन्तेकुस्त के दिन परिवर्तित होने वाले लोगों में से कोई अपने घर लौटा या नहीं। क्योंकि ''यरूशलेम के आस पास के नगरों से'' बहुतेरे लोग अपने बीमार सम्बन्धियों को चंगा होने के लिए लाते थे (प्रेरितों 5:16), कई लोगों को आश्चर्य है कि क्या यरूशलेम के आस पास के क्षेत्र में कलीसियाएं स्थापित हो चुकी थीं। परन्तु, सामान्यत:, हम यह कह सकते हैं कि प्रेरित अभी यीशु की बिनती के अनुसार यरूशलेम से आगे गवाह *नहीं* बने थे। [4]8:1, 4 में यूनानी शब्द के अनुवाद ''तितर बितर'' का प्रयोग यूनानियों के द्वारा बीज को बिखराने के लिए किया जाता था। [5]''भाड़े का हत्यारा'' किराए पर लिए गए हत्यारे को कहा जाता है। यकीनन ही ऐसा कोई संकेत नहीं है कि मसीहियों का कत्ल करने के लिए शाऊल को वेतन दिया जाता था। वह यह सब इसलिए करता था क्योंकि उसे लगता था कि उसे यह करना चाहिए (इस भाग में शाऊल के मनपरिवर्तन पर प्रवचन देखिए)। [6]जब शाऊल बाद में मसीहियों को गिरफ़्तार करने दमिश्क गया, तो स्पष्टत: उसकी सहायता के लिए ''मनुष्य उसके साथ थे'' (9:7)। [7]क्या इसका अर्थ यह है कि सताव शुरू होने पर मसीही लोग आस पास के क्षेत्र में सुरक्षा के लिए *भाग गए* या शाऊल और उसके सहयोगी उन्हें नगर से बाहर *खींच* लाए? सम्भवत: ये दोनों बातें हुईं। [8]''सब' (*पेन्टिस*) के लिए शब्द आम तौर पर साधारण व्याख्या के लिए होता है सम्पूर्ण क्रिया के लिए नहीं।'' [9]बहुत से टीकाकारों का मानना है कि सताव मुख्य रूप से यूनानी यहूदी मसीहियों जैसे कि स्तिफनुस पर केन्द्रित था। इस कारण प्रेरित (और अन्य देशीय यहूदी मसीही) शाऊल और उसके हमवतनों द्वारा अकेले छोड़ दिए गए थे। जो यह बात कहते हैं, वे (8:2; 9:26; 11:2, 22) यह मानते हुए कि यह देशीय यहूदी मसीही थे, टिप्पणी करते हैं कि कुछ मसीही यरूशलेम में रहे। दूसरी ओर, यह असम्भव है कि नगर से *प्रत्येक* मसीही को खींचा गया हो, और कई शाऊल के मनपरिवर्तन के बाद वापस यरूशलेम में आ गए हों। फिर, बरनबास उनमें से एक था जो बाद में यरूशलेम की कलीसिया में थे (11:22), और बरनबास कुप्रुस से था (अर्थात वह एक यूनानी भाषी मसीही था) (4:36). 8:1, के ''सब के सब'' को ''यरूशलेम में अधिकतर यूनानी भाषा बोलने वाले मसीहियों'' के बजाय ''यरूशलेम में अधिकतर मसीहियों'' पर विचार करना अधिक अच्छा लगता है। [10]''श्रद्धालु'' मसीहियों या गैर मसीहियों को कहा गया हो सकता है (लूका 2:25; प्रेरितों 2:5; 22:12)। मैं कल्पना करता हूं कि यदि सभी नहीं तो, इन में से अधिकांश लोग मसीही थे, क्योंकि विशेषकर उस ख़तरे के बीच जो उसे दफ़नाने में था गैर मसीहियों ने नहीं, बल्कि मसीहियों ने अपने भाई स्तिफनुस को दफ़नाया होगा।

[11]यह नियम सम्भवत: हारून के पुत्रों की मृत्यु के समय उस पर लगी पाबन्दी जैसा ही है (लैव्यव्यवस्था 10:6; यिर्मयाह 22:19 भी देखें)। [12]यह पहली बार है जब कलीसिया की महिला सदस्यों को सताव के लिए निशाना बनाया गया। [13]इसका अर्थ यह हो सकता है कि उसने उनसे यीशु को प्रभु के रूप में अंगीकार करवाने की कोशिश की हो, जो कि उस समय ईशनिन्दा थी और जिसकी सज़ा मृत्यु दण्ड थी या इसका अर्थ यह हो सकता है कि उसने उनसे यीशु का इन्कार कराने की कोशिश की हो, जो प्रेरितों 26 में उसके बयान देते समय उनकी नज़र में ईशनिन्दा होगी। सम्भवत: बाद वाली बात उसी के लिए थी। [14]ये विचार सदर्न हिल्ज़ चर्च ऑफ़ क्राइस्ट में 21 अप्रैल 1985 को दिए गए संदेश रिक ऐचले, ''विक्ट्री इन ट्रैजिडी,'' से लिए गए थे। [15]शब्दावली में देखिए ''सामरी।'' [16]''फिलिप्पुस और पतरस की यात्राएं'' का मानचित्र देखिए। [17]थियोलोजिकल दृष्टिकोण से, सामरी यहूदियों से अधिक दूर नहीं निकाले गए थे (विशेषकर सदूकियों से), परन्तु उनका शमौन जादूगर को मानना यह दिखाता है कि,

व्यावहारिक तौर पर, वे अपनी मूर्तिपूजक कुल-परम्परा से भी अधिक दूर नहीं गए थे। [18]अन्य शब्दों में, उसने आत्मा की शिक्षा मानी थी (जो प्रेरितों के द्वारा दी गई थी) ताकि उसका जीवन आत्मा के नियन्त्रण में हो जाए। इस कारण उसके जीवन ने ''आत्मा का फल'' उपजाया था (गलतियों 5:22, 23)। [19]यरूशलेम देश में सबसे ऊंचे स्थान पर स्थित था। कोई यरूशलेम से किसी भी दिशा में जाए वह ''नीचे'' ही होता था (ध्यान दें पद 15)। [20]*सिबस्ते* ''औगुस्तुस'' के लिए यूनानी नाम था। शहर का पुन: नामकरण सम्राट को आदर देने के लिए किया गया था।

[21]NIV में ''सामरिया में *एक* नगर'' है। एक सम्भावना गित्ता भी है, जो कि शमौन जादूगर का पारम्परिक घर था। [22]प्रेरितों 6:6 और 8:18 पर नोट्स देखिए। [23]आश्चर्यकर्मों के उद्देश्य पर, देखिए मरकुस 16:20; इब्रानियों 2:3, 4. ध्यान दें कि फिलिप्पुस ने पहले आश्चर्यकर्म किए और *फिर* प्रचार किया। तथाकथित ''चंगाई सभाओं'' में आज, आम तौर पर भीड़ को आवेश में लाने के लिए पहले प्रचार किया जाता है, ताकि उन्हें उन होने वाले ''चमत्कारों'' के लिए तैयार किया जा सके। [24]''दुष्टात्माएं: दुष्ट अलौकिक जीव'' पर अतिरिक्त लेख देखिए। [25]ध्यान दें कि आत्मा से प्रेरणा प्राप्त डॉ. लूका भूतों से ग्रस्त होने और शारीरिक बीमारी में अन्तर करता है। [26]''टोना करके'' (*mageuon*) के लिए यूनानी शब्द ''magi'' (मत्ती 2:1) के लिए यूनानी शब्द से सम्बन्धित है। इस कारण हिन्दी की बाइबल में शमौन को ''शमौन टोना'' कहा गया है। [27]बारनम एण्ड बेली सर्कस से प्रसिद्धि प्राप्त, पी. टी. बारनम, अब तक के महानतम व्यवस्थापकों में से एक था। [28]शमौन के टोने और फिलिप्पुस के चमत्कारों में अनेक भिन्नताएं बताई जा सकती हैं। अन्य बातों में, जो कुछ फिलिप्पुस ने किया वह व्यावहारिक था: उसने लोगों को चंगा किया और लोगों को आनन्दित किया। शमौन ने लोगों को मूर्ख बनाया और उन्हें भयभीत किया। विस्तार से तुलना के लिए, ''एक जादूगर का मनपरिवर्तन'' पर प्रवचन देखिए। [29]फिलिप्पुस द्वारा किए गए चमत्कारों पर शमौन की हैरानगी उनकी वास्तविकता की शक्तिशाली गवाही है। यदि फिलिप्पुस ने प्रसिद्धि पाने के लिए लोगों में कुछ ओछे हथकंडे अपनाए होते (जैसे कि कुछ आलोचकों का कहना है), तो शमौन को तुरन्त उनका पता चल जाता। [30]इस तथ्य में विडम्बना की एक झलक मिलती है कि भेजे हुए लोगों में से यूहन्ना एक था। आरम्भ में सामरिया की आरम्भिक यात्रा पर, उसने सामरियों पर आग गिराए जाने की इच्छा की थी (लूका 9:52-54)।

[31]सुझाव दिया गया है कि परमेश्वर ने सामरियों से ''आत्मा के (गैर चमत्कारी) दान'' को जानबूझ कर रोक लिया और यह दिखाने के लिए कि उन्हें भी परमेश्वर ने स्वीकार कर लिया था, पतरस और यूहन्ना सामरियों पर आत्मा के इस ''साधारण माप'' को देने के लिए ''एक समारोह'' में विशेष तौर पर सामरिया में आए। मैं मानता हूं कि पतरस और यूहन्ना दिखाना चाहते थे कि सामरियों को परमेश्वर ने स्वीकार कर लिया है, परन्तु (1) यह अकल्पनीय है कि परमेश्वर इतनी महत्वपूर्ण आशीष उनसे रोक ले जिन्हें बपतिस्मा दिया गया था। ''यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं''(रोमियों 8:9)। क्या पतरस और यूहन्ना के पहुंचने तक सामरी लोग मसीह के जन नहीं थे? (2) क्योंकि इसका कोई बाह्य चिह्न नहीं है कि कोई मनुष्य आत्मा के ''साधारण दान'' को कब प्राप्त करता है, सभी लोगों ने पतरस और यूहन्ना को लोगों पर वास्तव में हाथ रखते हुए *देखा* होगा। यहूदी अथवा सामरी पर यह कैसे उजागर होता है कि परमेश्वर ने सामरियों को स्वीकार कर लिया था? चमत्कारी काम करने की योग्यताओं के दान देना (जिसे देखा जा *सकता* था) अवसर के अनुकूल था; मिले हुए आत्मा का दिया जाना नहीं। [32]तथ्य कि फिलिप्पुस चमत्कार करने की योग्यता आगे नहीं दे सका, को इस तथ्य से और बल मिलता है कि शमौन ने लोगों पर हाथ रखने की योग्यता फिलिप्पुस से नहीं, बल्कि प्रेरितों से खरीदने की कोशिश की। ''यह तो अविश्वसनीय लगता है कि यदि फिलिप्पुस ऐसा दान दे सकता तो प्रेरितों के बजाय, शमौन उससे खरीदने की कोशिश न करता'' (कॉफ़मैन, 164)। [33]मैं इसे एक मज़बूत तर्क मानता हूं, और यह तर्क देते हुए मैं हिचकिचाता नहीं। इसके साथ ही, मैं यह महसूस करता हूं कि यह प्रश्न कि क्या चमत्कारी दान बन्द हुए हैं या नहीं, मेरे यह प्रमाणित करने पर निर्भर नहीं है कि चमत्कारी दान केवल प्रेरितों के हाथ रखने से ही दिए जाते थे। बहुत से शक्तिशाली तर्क हैं जो प्रमाणित करते हैं कि चमत्कारी दान मिलने बन्द हो गए हैं। [34]सामरियों में प्रचार से वह उत्तेजना नहीं आई जो बाद में अन्यजातियों में प्रचार से आई [11:1, 2]। सामरियों का यीशु को स्वीकार करना सम्भवत: एक तत्व

है कि वे खतना में विश्वास रखते थे और करवाते थे (यूहन्ना 4:1-42)। [35]क्योंकि आयत 15 कहती है कि पतरस और यूहन्ना ने ''उनके लिए प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएं,'' कइ लोगों ने यह सुझाव दिया है कि प्रार्थना प्रेरितों के विशेष दान देने का वैकल्पिक ढंग था। यह किन्तु परन्तु की बात नहीं है। प्रेरितों ने उन सात पर हाथ रखने से पहले, प्रार्थना की (6:6)। प्रेरित हर अवसर पर प्रार्थना करते थे (1:14, 24; 4:24)। परन्तु, पवित्र शास्त्र स्पष्ट बताता है, कि दान हाथ रखने से ही दिए जाते थे (8:18)। [36]परमेश्वर के दान को धन से खरीदने की शमौन की कोशिश ने अंग्रेज़ी भाषा के शब्द ''simony'' को जन्म दिया। ''simony'' (मध्य युग में पाया जाने वाला एक पाप) कलीसिया के ओहदों या अधिकारों को बेचने और खरीदने के लिए प्रयोग किया जाता था। [37]पतरस के शब्द उससे कठोर हैं जो हिन्दी में दिखाई देते हैं। मूलत:, उसने कहा, ''तेरी चांदी तेरे साथ (सदा के लिए) नाश हो!'' इसका अर्थ यह नहीं कि पतरस ने शमौन को अपनी ओर से नरक के लिए सौंपा। आयत 22 में पतरस ने उस सज़्भावना को माना कि शमौन को क्षमा मिल सकती थी। [38]यहां पर ''परमेश्वर का दान'' चमत्कार करने के दान को नहीं कहा गया, बल्कि वह योग्यता मिलने के दान को कहा गया है (वह दान जो प्रेरितों को पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाने पर दिया गया)। [39]''इस बात'' शब्द अस्पष्ट है। NIV में ''इस सेवकाई'' है (अर्थात, लोगों पर हाथ रखने की बात)। यह अधिक सज़्भव है कि पतरस उद्धार, ''अर्थात, सुसमाचार की आशिषों में'' की बात कहता हो ''यदि परमेश्वर के सामने उसका हृदय शुद्ध होता, तो भी पवित्र आत्मा के देने में उसका कोई भाग नहीं था'' (जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे, न्यू कमैन्ट्री ऑन ऐक्ट्स ऑफ़ अपोस्टल्ज़, अंक 1 [डिलाइट, आरक.: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., n.d.], 147)। [40]मूलत:, इसका अर्थ है ''तेरा मन सीधा नहीं है,'' अर्थात उसका मन ''टेढ़ा'' था।

[41]पतरस के कठोर शब्द एक महत्वपूर्ण सच्चाई को रेखांकित करते हैं। पापियों के साथ ''कठोर होने'' का समय और स्थान है, विशेषकर जब एक पापी इसे महसूस किए बिना नरक में सिर के बल जाता हो! [42]बाद में पतरस के 2 पतरस 2:20-22 लिखते समय शमौन ही होगा। [43]''शरीर को मारना कूटना'' स्व-अनुशासन के लिए अलंकार है। पौलुस ने अपने शरीर का अपमान नहीं किया (1 कुरिन्थियों 6:9; 3:16, 17)। [44]यदि उपयुक्त हो, तो आप एक पथभ्रष्ट मसीही को जब वह रास्ते से भटक जाए, प्रभु और उसकी कलीसिया में लाने के लिए कुछ समय बिताएं (गलतियों 6:1; याकूब 5:19, 20)। [45]जैसे पहले हमने ध्यान दिया था, बाद की, आत्मा की प्रेरणा रहित परज़राओं के अनुसार, शमौन ने मन नहीं फिराया बल्कि वह पतरस का एक कठोर शत्रु और बहुत सी झूठी शिक्षाओं को आरज़्भ करने वाला बन गया। मैं उनकी तरफ हूं जो मानते हैं कि शमौन का नाम झूठे शिक्षकों के द्वारा अपना लिया गया, जैसे कि निकोलास का नाम भी (पद 6:5 पर नोट्स देखिए)। यकीनन ही, शमौन ने वास्तव में पश्चात्ताप किया या नहीं, इससे इस प्रश्न पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता कि वह वास्तव में परिवर्तित हुआ और फिर गिर गया और न ही इस पर कि वह पश्चात्ताप करके लौट सकता था। [46]''गवाही देकर'' प्रेरितों 1 में अनुवादित शब्द ''गवाही'' का क्रिया रूप है। [47] पृष्ठ 38 पर ''फिलिप्पुस और पतरस की यात्राएं'' पर मानचित्र देखिए। किसी न किसी प्रकार, जो स्त्री यीशु को याकूब के कुएं पर मिली थी उसे यह जानने का अवसर मिल गया था कि ''जीवन के जल'' से यीशु का क्या अर्थ था (यूहन्ना 4:10-15)! [48]यद्यपि हम कलीसिया में एक धर्मान्तरित अर्थात यहूदी मत धारण करने वाले के बारे में पढ़ चुके हैं (6:5), परन्तु हमने यहूदी मत धारण करने वाले किसी व्यक्ति के मनपरिवर्तन को विस्तार से नहीं देखा। इसकी चर्चा इस भाग के अन्तिम पाठ में की जाएगी। [49]आत्मा की प्रेरणा रहित परज़रा के अनुसार, खोजा इथोपिया में सुसमाचार लेकर गया। यदि परज़रा न ज़ी बताती तो भी लूका हम से अपेक्षा करता कि हम समझ लें कि खोजे ने भी वही किया जो दूसरे मसीही करते थे (8:4)। [50]एक प्रचारक को वेतन देना वचन के अनुसार है (1 कुरिन्थियों 9) ताकि वह पूरा समय काम कर सके, परन्तु हम एक प्रचारक को *अपना* काम करने के लिए वेतन नहीं दे सकते।

[51]स्पष्ट संकेत हैं कि प्रेरित अपने प्रयासों के लिए पूरा समय देते थे और यह कि वे और उनके परिवार कलीसिया के सहारे ही थे (3:6; 6:4; 1 कुरिन्थियों 9:1-6)। [52]अनुवादित शब्द ''सुनाते हुए'' सार्वजनिक घोषणा नहीं थी। 1 तीमुथियुस 2 और 1 कुरिन्थियों 14 के अनुसार, औरतें घरों में ऐसा करती होंगी। उन मसीही स्त्रियों के उदाहरणों को जानने के लिए कि वे क्या करती थीं, देखिए प्रेरितों 18:26।